राजस्थान में रामभक्त हनुमान के प्रसिद्ध मन्दिर

श्रीमती माधुरी शास्त्री
वरिष्ठ साहित्यकार
सी/८, पृथ्वीराज रोड, जयपुर

महाराणाप्रताप जैसे परमवीरों की भूमि राजस्थान ने अनेक शताब्दियों से अंजनीनन्दन रामभक्त महावीर हनुमान के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धा अनेक रूपों में व्यक्त की है। राजस्थान की धरा पर गाँव गाँव, गली गली और शहर शहर में हनुमान के मन्दिर देखे जा सकते हैं। राजस्थान के साहित्यकारों ने हनुमान की स्तुति में संस्कृत और हिन्दी से लेकर राजस्थान की बोलियों तक सभी माध्यमों से रचनाएँ की हैं, काव्य और स्तोत्र लिखे हैं, राजस्थानवासी अपने बालकों के नाम बजरंगलाल, हनुमत्प्रसाद, महावीर आदि रख कर गौरव का अनुभव करते हैं। घर-घर में रामायण के सुंदरकाण्ड, रामचरितमानस के सुंदरकाण्ड और हनुमान चालीसा आदि के प्रवचन, पारायण, कीर्तन और जप होते देखे जा सकते हैं।

हनुमान मन्दिरों की छटा राजस्थान के नगरों और ग्रामों में सदियों से रामभक्तों को आल्हादित करती रही है। वैसे तो क्षेत्रपाल और जनरक्षक के रूप में गाँव- गाँव में हनुमान के चबूतरे देखे जा सकते हैं जहाँ वीरालंकरण सिंदूर से सजी हनुमान की एक मूर्ति ग्रामवासियों को सब तरह की विपदाओं से बचाने वाली 'आशीष' के रूप में बच्चे-बूढ़े, सभी के द्वारा पूजी जाती है, किंतु राजस्थान के अनेक स्थानों पर ऐसे हनुमानमंदिर भी हैं, जो विशाल तीर्थस्थल के रूप में सदियों से यात्रियों (जनसमुदाय) के आकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं।

सीकर के निकट चूरू जिले में सालासर नामक गाँव में अठारहवीं सदी में बना बालाजी का मन्दिर विराजमान है जिसके कारण यह ग्राम 'सालासर धाम' बन गया है। आज यहाँ विशाल मन्दिर परिसर के अतिरिक्त अनेक धर्मशालाएँ आदि तो हैं ही, अनेक शिक्षा संस्थाएँ भी कार्यरत हैं। संस्कृत के स्नाकोत्तर महाविद्यालय में छात्राएँ भी संस्कृत का अध्ययन करती हैं। यहाँ की पूजा व्यवस्था दाधिमथ ब्राह्मणों द्वारा सँभाली जा रही है। इस मंदिर के संस्थापक श्री मोहनदास जी की जीवनगाथा अब प्रसिद्ध हो गयी है जो दो-तीन सदियों से प्रसारित भी हो रही है। किस प्रकार मोहनदास जी 'वचनसिद्ध' और' 'त्रिकालदर्शी' हो गये थे। उनकी बहन कालीबाई ने उनका विवाह कराना चाहा तो उन्हें यह आभास हुआ कि लडकी जिसके साथ उसका विवाह तय हुआ है वह मर गई है। तदनंतर वे अविवाहित रहे। उनके द्वार पर कोई साधु भिक्षा के लिए आया, उसे वाँछित सत्कार मिला। उसने वहाँ ऐसी खाट पर सोना चाहा, जिस पर कोई न लेटा हो। वह साधु स्वयं हनुमान जी थे। इनकी प्रेरणा से मारवाड के एक ग्राम आसोटा में (जो लाडनूँ और जसवंतगढ के बीच मारवाडी गाँव है) अचानक

हल के नीचे से प्राप्त एक मूर्ति को यहाँ मँगवाकर मोहनदास जी ने श्रावण शुक्ल दशमी संवत् 1811 को उसकी सालासर में प्राणप्रतिष्ठा कर स्थापना की। धीरे धीरे इस मूर्ति के अद्भुत चमत्कार ग्रामवासियों को दिखने लगे। अत: यहाँ विशाल मंदिर बना, अनेक सेवागृह बने, धर्मशालाएँ बनीं, साथ में पाठशालाएँ भी बनीं।

मंदिर में हनुमान जी का श्रीविग्रह सोने के सिंहासन पर विराजमान है। ऊपर श्रीराम का दरबार है, मंदिर के आँगन में एक जाल का वृक्ष है, जिसमें भक्तगण नारियल बाँध देते हैं जिससे उनकी मनोकामना पूरी हो जाती है।

जयपुर, बाँदीकुई, भरतपुर के बीच मेहंदीपुर ग्राम के बालाजी लगभग एक सहस्राब्दी से सब तरह से विपत्तियों, विशेषकर भूत-प्रेत आदि की 'ऊपरी बाधाओं' के निवारण के लिए प्रसिद्ध है। इन्हें ही 'मेहंदीपुर के बालाजी' कहा जाता है, किंतु जब से प्रेतबाधा आदि से पीडित व्यक्ति यहां आकर भूत बाधा से मुक्ति पाने की विशिष्ट कामना रखने लगे हैं तब से यहाँ स्थापित भैरवनाथ यहाँ के विशिष्ट उपास्य बन गये हैं। उनकी धूनी यहाँ देखी जा सकती है जिसके चारों ओर सिर धुनते हुए, प्रेतबाधा से मुक्ति की कामना वाले भक्त देखे जा सकते हैं। कहा जाता है कि यहाँ के महंत जी के किसी पूर्वज को हनुमान जी ने स्वप्न में दर्शन देकर यह कहा कि मेरी अमुक स्थान पर जो मूर्ति है उसकी स्थापना करवाओ, मंदिर बनवाओ। इस आज्ञा के अनुपालन में जो मंदिर बना तथा उसके आसपास जो मंदिर बने, उनके कारण मेहंदीपुर ग्राम प्रसिद्ध हो गया।

भूतबाधा और अनिष्ट को दूर करने वाले देव के रूप में जिस प्रकार भैरव जी प्रसिद्ध हैं उसी प्रकार हनुमानजी भी हैं। इसका प्रमाण राजस्थान के अनेक मंदिरों में मिलेगा। हाडौती क्षेत्र में, कोटा में चम्बल नदी पर, 'गोदावरीधाम' में स्थित हनुमानजी सब तरह की बाधाओं का शमन करने वाले, आशीर्वाद प्रदाता देवता के रूप में पूजे जाते हैं। अब तो चम्बल की पाल पर एक विशाल क्षेत्र में यह मंदिर 'अमर निवास' नाम के विशाल भवन के कारण प्रसिद्ध है। जहाँ धर्म संस्कृति शिक्षा आदि के अनेक कार्य किए जाते हैं। वहाँ स्वर्गीय गोपीनाथ भार्गव नामक एक समर्पित भक्त के नेतृत्व में बींसवीं सदी के अंत में अनेक प्रवचन विद्वत् संगोष्ठी आदि आयोजित हुई, संस्कृत शिक्षा के अनेक उपक्रम किए गए।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में अनेक हनुमान मंदिर सदियो से नागरिकों की श्रद्धा का केंद्र बने हुए हैं। नगर के सभी प्रवेश द्वारों पर विशिष्ट मारुति मंदिर बनाये गये थे, क्योंकि क्षेत्रपाल अर्थात् क्षेत्ररक्षक देवता के रूप में हनुमान जी की मान्यता सदियों से चली आ रही है। जयपुर के पश्चिम द्वार पर 'चांदपोल' नाम से जो प्रवेश द्वार बना हुआ है उस पर अनिष्ट निवारक, मृत्यु को भी वश में करने वाले देवता के रूप में हनुमान का मंदिर बना हुआ है। जयपुर नाम की सुनियोजित नगरी के रूप में स्थापना तो सवाई जयसिंह ने सन् 1727 ईस्वी में की थी उससे पूर्व राजधानी आमेर थी, किन्तु आमेर के राजा सवाई मानसिंह प्रथम (जो बादशाह अकबर के सिपहसालार थे) द्वारा सोलहवीं सदी में एक हनुमान मूर्ति आमेर में स्थापित की गई थी, वही द्वारपाल देवता के रूप में सवाई जयसिंह ने यथावत् रखी और आज भी पूजी जाती है। इसके लिए एक दोहा प्रसिद्ध है- "सांगानेर को सांगो बाबो जयपुर को हनुमान। आमेर की शिला देवी, लायो राजा मान॥"

जयपुर के उत्तरी द्वार पर 'सांगानेरी गेट' बना हुआ है जिसके रूप में भी द्वाररक्षक हनुमान की मूर्ति और मंदिर विराजमान है। इन पुराने मंदिरों की मान्यता तो चली आ रही है, आधी सदी पूर्व स्थापित एक मारुति मंदिर ने आज जो मान्यता, विशाल स्वरूप और विश्वजनीन आकर्षण प्राप्त कर लिया है वह और भी उल्लेखनीय हो गया है। यह मंदिर है जयपुर दिल्ली बाईपास पर एक बड़े भूखण्ड पर बना हुआ हनुमानजी का मंदिर जो आजकल 'खोले के हनुमान' के रूप में प्रसिद्ध हो गया है। इसके संस्थापक श्री राधेलाल चौबे (1929-2009) थे, जिन्होंने नरवरदासजी का खोला नामक परिसर में शैलखण्ड पर उत्कीर्ण मारुति मूर्ति को स्थापित कर सन् 1961 ई. में एक मंदिर बनवाया जो धीरे धीरे भक्तों के आकर्षण का केंद्र बन गया। अब तो वहाँ राम मंदिर, प्रवचनशाला, भोजनशालाएँ आदि अनेक विशाल भवन भी बन गये हैं। सरकारी अनुदान से परिसर के चारों ओर उपवन, मार्ग, पार्किंग स्थल, पर्यटन स्थल, दुकानें आदि बनाये गये हैं और बनाये जा रहे हैं जिनके कारण यह पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र भी बन गया है।

जयपुर से कुछ दूर है विराट नगर जो आज जयपुर दिल्ली के बीच अलवर के पास स्थित है और जिसका सहस्राब्दियों का इतिहास विश्वप्रसिद्ध है, क्योंकि यही थी मत्स्य देश की राजधानी जिसके राजा विराट के दरबार में पांडवों ने अज्ञातवास का एक वर्ष इसी स्थान पर वेष बदलकर बिताया था। इसी विराट नगर में (जो आजकल बैराठ कहलाता है) अशोक के शिलालेख मिले थे। यहां पहाड की चोटी पर वज्रांगदेव का विशाल मंदिर बना हुआ है जिसमें हनुमानजी की विशाल मूर्ति स्थापित है। यह नराकृति देवमूर्ति है जो पंचखंडपीठाधीश्वर राष्ट्रभक्त, गौ ब्राह्मण हितैषी श्री रामचंद्र 'वीर' महाराज ने इस चोटी पर स्थापित की। यह मूर्ति साढ़े सात फीट ऊँची संगमरमर निर्मित है। यहाँ माघ शुक्ल त्रयोदशी को प्रतिवर्ष प्राण-प्रतिष्ठा महोत्सव मनाया जाता है, विशाल मेला लगता है। पंचखंडापीठाधीश्वर आचार्य श्री धर्मेंद्र महाराज जी जो विश्व हिंदू परिषद् से निरंतर जुडे रहे हैं, प्रसिद्ध प्रवचनकर्ता कवि एवं लेखक थे । उन्होंने इनकी महिमा को बहुत बढाया। आजकल उन्हीं के सुपुत्र आचार्य सोमेन्द्र इस परम्परा का निर्वाह कर रहे हैं। इस मन्दिर की यह महिमा है कि एक हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित इस मन्दिर के दर्शन हेतु हजारों सीढियाँ चढ़कर दर्शनार्थी पहुँचते हैं।

नागौर जिले में एक अन्य प्राचीन मन्दिर है जो पहाड़ी पर स्थित है और बड़ा गाँव के बालाजी के नाम से प्रसिद्ध है। बालाजी के नाम से ही रेलवेस्टेशन भी बहुत पहले से स्थित है। लगभग चार सौ वर्ष पूर्व एक सन्त शुकदेवजी पुरी जी द्वारा स्थापित इस मन्दिर की अनेक गाथाएँ प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि पुरी ने चूरू जिले के गोपालपुरा गाँव में तपस्या की थी। वहाँ उन्हें हनुमानजी द्वारा आशीर्वाद प्राप्त हुआ। उन्होंने अनेक वर्षों तक उस मूर्ति की पूजा भी की। पुरीजी को किसी कारणवश नागौर के एक गाँव में आकर बसना पड़ा तो उन्होंने हनुमान से प्रार्थना की कि - "हे हनुमन्! आप यहाँ मेरी सेवा लेने के लिए पधारें और यहीं निवास करें तो मैं कृतार्थ हो जाऊँ" कहते है कि हनुमानजी ने दर्शन देकर कहा- "ठीक है, मैं इस गाँव में ही प्रकट हो जाऊँगा। स्वामीजी और उनके अनुयायी चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को वहाँ की पहाडी के पास बैठ कर हनुमानजी का ध्यान करने लगे। अचानक पहाडी में एक ध्वनि के साथ दरार पड़ गई। वहीं एक पाषाण पर हनुमानजी का विग्रह अंकित दिखलाई दिया। उस मूर्ति को वहीं प्रतिष्ठापित कर दिया गया। तभी से यह स्थान बड़ा गाँव के बालाजी के नाम से प्रसिद्ध हो गया।

जयपुर में ही एक प्रसिद्ध मन्दिर है' काले हनुमानजी का जो बड़ी चौपड़ से उतरते हुए चाँदी की टकसाल के समीप स्थित है। इस मन्दिर की मूर्ति(विग्रह) की अपनी ही रौनक और आभा है। यहाँ दर्शनार्थियों की भीड़ लगी रहती है। विशाल परिसर और भोग के लिए एक रसोईघर तथा दर्शनार्थियों के लिए विश्राम की उचित व्यवस्था हैं।

जयपुर से 43 किलोमीटर दूर चौमूँ के निकट सामोद में 600 वर्ष पुराना 'वीरहनुमानजी का मन्दिर है। यह पहाड़ी पर ऊंचाई पर स्थित है। इस मन्दिर पर आवागमन के लिए भक्तों को एक हजार पचास सीढ़ियाँ पार करनी पड़ती है। लेकिन अब तो सुविधा के लिए 'रोपवे' भी बन गया है। बालाजी ने 600 वर्ष पूर्व पूर्व स्वयं अपने भक्त को स्वप्न में दर्शन देकर आदेश दिया कि मेरी प्रतिष्ठा कराई जाए। तब हनुमानजी की 6 फुट की प्रतिमा स्थापित की गई। बालाजी की यह महिमा है कि वे सब तरह की बीमारियाँ दूर करते हैं साथ ही भक्तों की मनोकामना पूर्ण करते हैं। मनोकामना के लिए मन्दिर में थैलियाँ बाँधी जाती है। इस मन्दिर द्वारा किया गया तिलक वरदायी माना जाता है। मन्दिर में निरन्तर नारियल चढ़ते रहते हैं। उन्हीं का भोग प्रसाद मिलता है। दोनों समय आरती होती है। वीर हनुमानजी की भव्य प्रतिमा देख भक्तजन विभोर हो जाते हैं।

अतुलित बलधामं हेमशैलाभदेहं दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि ।।

बीकानेर में रतनबिहारीजी के वैष्णव मन्दिर के पास हनुमानजी का मन्दिर भी स्थित है। यहाँ प्रत्येक मंगलवार को भक्तों की भीड़ रहती है। अनेक आयोजन होते हैं। इन्हें इच्छाओं का पूर्ण करने वाला माना जाता है।

बीकानेर के पास सूडसर स्टेशन से दस मील दूर हनुमानजी का प्रसिद्ध मन्दिर है। इसके दर्शनार्थ जैनसमाज के लोग भी आते हैं। प्रति वर्ष विशाल मेला लगता है।इसे 'पूरनासर' हनुमानजी के नाम से मान्यता प्राप्त है।

नागौर के पास डेगाना तहसील के बडू गाँव में हनुमानजी का मन्दिर है जिसमें हनुमानजी की तीन मूर्तियाँ है- दास हनुमान की, वीर हनुमान की, और भक्त हनुमान की। यहाँ भी वर्ष में एक बार मेला लगता है।

लूणी नदी के तट पर बाडमेर जिले में क्षीरपुर (खेड़) गाँव में हनुमानजी का मन्दिर है जिसमें विशालमूर्ति है। यहाँ आदिवासी अपने बालकों के मुंडन संस्कार कराने आते हैं। अपने आराध्य को 'खोड़ियाबाबा' कह करप्रणाम करते हैं।

श्रीनाथजी के धाम नाथद्वारा में चारों दिशाओं में हनुमानजी के मन्दिर हैं। पूर्व में सिंहाड़ के हनुमानजी, पश्चिम में बड़ी बाखर के, उत्तर में छावनी दरवाजा के और दक्षिण में चौबेजी की बगीची में हनुमान जी प्रतिष्ठापित हैं। कहते हैं कि पुष्टिमार्गीय आचार्यों ने क्षेत्ररक्षक के रूप में स्वयं इन मारुति मूर्तियों की स्थापना करवायी थी।

सवाईमाधोपुर में भी हनुमानजी का मन्दिर है। इसका भव्य निर्माण उन्नीस सौ पचास में हुआ, किंतु उससे पूर्व भी यहां हनुमानजी की आराधना होती थी। इस प्रकार शतश: हनुमान मंदिर राजस्थान में भक्तों के आकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं।